हो भाई मेरे वैष्णव कहिए

हो भाई मेरे वैष्णव कहिए वाको, निरमल जाकी आतम।
नीच करम के निकट न जावे, जाए पेहेचान भई पारब्रह्म।।

इस्क लगाए पिया सों पूरा, खेले अबला होए अहनिस।
ओ अंधे अग्यानी भरम में भूले, पर या ठौर प्रेम को रस।।

जब आतम दृष्ट जुड़ी परआतम, तब भयो आतम निवेद।
या विध लोक लखे नहीं कोई, कोई भागवंती जाने ए भेद।।

जब वैष्णव अंग किये री अपरस, और कैसी अपरसाई।
परस भयो जाको परसोतम सों, सो बाहेर न देवे देखाई।।

अहनिस आवेस हुअडा अंग में, जैसे मद चढ़्यो महामत।
वाकों आसा और न उपजे तृष्णा, वह एकै सों एक चित।।

साँचा री साहेब साँचसों पाइए, साँच को साँच है प्यारा।
या वैष्णव की गत देखो रे वैष्णवो, महामत इनसे भी न्यारा।।